بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 05.09.25

हुनैन नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का वर्णन।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (तबूक तिथि 5,1404 हश)5 .09. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हुनैन के युद्ध में दुश्मन सेना के तीर चलने वालों के कारण मुसलमानों की सेना में जो भगदड़ मची थी उसकी चर्चा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने सूरः नूर की आयत 64 की तफ़सीर में बयान करते हुए यह घटना बयान फ़रमाई है कि किस प्रकार नबी का आज्ञा पालन करना चाहिए। इस आयत का अनुवाद यह है कि ऐ मोमिनो! यह न समझो कि रसूल का तुममें से किसी को बुलाना ऐसा ही है जैसा कि तुम एक दूसरे को बुलाते हो। अल्लाह उन लोगों को जानता है जो तुममें से पल्लू बचाकर विचार विमर्श की सभा में से भाग जाते हैं। अतएव चाहिए कि जो इस रसूल के आदेश का विरोध करते हैं, इस बात से डरें कि उनको ख़ुदा की ओर से कोई संकट न पहुँच जाए, अथवा उनको कोई पीड़ा दायक प्रकोप न जकड़ ले।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि इमाम की आवाज़ की तुलना में किसी व्यक्ति की आवाज़ कोई महत्त्व नहीं रखती। तुम्हारा कर्त्तव्य है कि जब भी तुम्हारे कानों में ख़ुदा के रसूल की आवाज़ आए तुम तुरन्त उस पर लब्बैक कहो तथा उसके आज्ञा पालन के

लिए दौड़ पड़ो। इसी में तुम्हारी उन्नति का भेद छिपा हुआ है, बल्कि यदि इंसान उस समय नमाज़ भी पढ़ रहा हो तो तब भी उसका कर्तव्व्य है कि नमाज़ तोड़ कर ख़ुदा के रसूल की आवाज़ का जवाब दे। अतएव नबी की आवाज़ पर तुरन्त लब्बैक कहना एक अनिवार्य काम है बल्कि ईमान की निशानियों में से एक बड़ी निशानी है। एक अन्य अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इस्लामी सेना में भगदड़ मच जाने का विवरण बयान करके आँहज़रत ﷺ की सुदृढ़ता के विषय में फ़रमाते हैं कि ..... स्थिति ऐसी हो गई कि रसूलुल्लाह ﷺ के निकट केवल बारह सहाबी जमे रह गए। उस अवसर पर हज़रत अब्बास रज़ी. ने आँहज़रत ﷺ के घोड़े की बाग पकड़ी और निवेदन किया कि अब ठहरने से कोई लाभ नहीं, वापस चलें ताकि मुसलमानों को संगठित करके दोबारा हमला किया जा सके। परन्तु आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि ख़ुदा के नबी युद्ध स्थल से पीठ नहीं मोड़ा करते। यह कहकर आप स. ने घोड़े की बाग खींची तथा उसे और भी आगे बढ़ा दिया और यह शेअर पढ़ा कि मैं ख़ुदा का नबी हूँ और मैं झूठा नहीं हूँ और मैं जो आज चार हज़ार तीरों के आक्रमण से नहीं रुका और आगे ही बढ़ता चला जा रहा हूँ, तो कहीं इस दृश्य को देख कर तुम यह न समझ लेना कि मैं ख़ुदा हूँ अथवा मुझ में ख़ुदा के गुण पाए जाते हैं, नहीं! मैं ख़ुदा नहीं, मैं वही अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ, किन्तु ये लोग ख़ुदा-नुमा अस्तित्व होते हैं।

उस अवसर पर आँहुज़ूर ﷺ ने मुसलमानों को आवाज़ देकर वापस बुलाने का आदेश दिया, और जब मुसलमानों को आवाज़ दी गई तो कुछ ही क्षणों में निष्ठावान सहाबी रज़ी. अत्यन्त तीव्रता से वापस युद्ध के मैदान में आ गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. सहाबियों की इस श्रृद्धा का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि ये वे लोग थे जिन्होंने मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के उस ईमान से लाभ प्राप्त किया, जिस प्रकार मुहम्मद ﷺ की यह शान थी कि चाहे कैसा ही ख़तरा हो, ख़ुदा आप स. की नज़रों से ओझल नहीं होता था। यही शान अपने अपने स्तर के अनुसार सहाबा रज़ी. में पैदा हो गई।

रिवायतों में आँहुज़ूर ﷺ के साथ दृढ़ता पूर्वक जमे रहने वाले सहाबा रज़ी. एवं सहाबियात रज़ी. की संख्या तथा उनके नाम भी मिलते हैं। विभिन्न रिवायतों में यह संख्या एक सौ तक बयान की गई है। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ी. को लोगों के युद्ध के मैदान से भागने का इतना दुःख था कि आप रज़ी. ने रसूलुल्लाह ﷺ से निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह ﷺ! हमारे बाद जो तुलक़ा (अर्थात-मक्का के वे निवासी जिन्हें आप स. ने दया करते हुए क्षमा कर दिया था) मिलें उनकी हत्या कर देना। आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे सुलैम! निःसंदेह अल्लाह तआला दुश्मन की तुलना में काफ़ी हुआ और उसने उपकार किया।

एक अन्य वीर सहाबिया हज़रत उम्मे अम्मारह रज़ी. से रिवायत है कि जब हुनैन के युद्ध वाले दिन लोग भाग खड़े हुए तो हम चार महिलाएं थीं। मेरे पास तेज़ काटने वाली

तलवार थी, तथा उम्मे सुलैम के पास तेज़ छुरा था और उन्होंने वो छुरा कमर के साथ बाँध रखा था और वे गर्भ से थीं। उनके अतिरिक्त दो अन्य महिलाएं भी थीं। हज़रत उम्मे अम्मारह रज़ी. ने आवाज़ दी और कहा कि ऐ अंसार! तुम्हें भागने से क्या काम? वे कहती हैं कि मैंने हवाज़न क़बीले के एक व्यक्ति को देखा जो झंडा उठाए भूरे रंग के ऊँट पर सवार था, वह मुसलमानों के पीछे भागा जा रहा था। मैं उसके सामने आई और उसके ऊँट की कूंचों पर वार किया, वह सवार अपनी पीठ के बल नीचे गिरा तो मैंने उस पर हमला किया और उस पर वार करती रही, यहाँ तक कि उसे मौत की नींद सुला दिया। फिर मैंने उसकी तलवार ले ली और रसूलुल्लाह ﷺ के पास आई। आप स. सहाबा रज़ी. को पुकार रहे थे और साहब रज़ी. वापस आ रहे थे, और फिर मुसलमानों ने दुशमन पर हमला किया और दुश्मन इतनी देर ही ठहर सका जितनी देर में ऊंटनी का दूध निकाला जाता है। मैंने दुश्मन की ऐसी अपमान जनक पराजय कभी नहीं देखी, वह मुंह उठाए इधर उधर भगा जाता था। मेरे बेटे वापस आए तो उनके पास बन्दी बनाए गए लोग थे।

सहाबा रज़ी. के वापस पलटने पर जब घोर युद्ध चल रहा था तो आँहुज़ूर ﷺ ने नज़र उठा कर युद्ध को देखा और आप स. उस समय अपने खच्चर पर सवार थे। आप स. ने फ़रमाया कि युद्ध अपनी चरम सीमा पर है, फिर आप स. ने कंकड़ उठाए तथा उन्हें काफ़िरों के चेहरों की ओर फेंका और फ़रमाया- मुहम्मद (ﷺ) के रब की क़सम! ये लोग पराजित हो गए। हज़रत अब्बास रज़ी. कहते हैं कि मैंने देखा तो लड़ाई वैसे ही हो रही थी, जैसे मैं देखता था। अल्लाह की क़सम! ज्यूं ही आप स. ने कंकड़ियां फेंकीं तो काफ़िरों का घोर संग्राम ठंडा पड़ने लगा और उनका मामला उलटने लगा। उस अवसर पर आप स. की एक दुआ का भी वर्णन मिलता है जो इस प्रकार है- ऐ अल्लाह! मैं तुझे उसका वास्ता देता हूँ, जो तू ने मुझसे वादा किया था। ऐ अल्लाह! इनके लिए उचित नहीं कि ये हम पर ग़ालिब आएं और हम इनके आधीन हो जाएं।

शीबा बिन उस्मान एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था जिसका बाप ओहद की लड़ाई में मारा गया था, वह स्वंय कहा करता था कि चाहे पूरा अरब देश मुहम्मद (ﷺ) का कलमा पढ़ ले किन्तु मैं फिर भी मुसलमान नहीं होऊँगा। वह कहता है कि जब युद्ध स्थल पर आप स. के पास केवल कुछ ही लोग रह गए तो मैंने सोचा कि यह अच्छा अवसर है कि मैं मुहम्मद (ﷺ) को (नऊज़ुबिल्लाह) मार डालूँ, यह सोच कर मैंने दाईं ओर से हमला करना चाहा तो वहाँ मैंने अब्बास को खड़ा देखा। मैंने सोचा कि अब्बास के होते हुए मैं मुहम्मद (ﷺ) पर हमला नहीं कर सकता। फिर मैंने बाईं ओर से हमला करने का निश्चय किया तो उस तरफ़ अबू सुफ़यान बिन हारिस को खड़ा पाया, तो मैं वापस हो गया। फिर मैंने आप स. के पीछे से हमला करना चाहा तो मैं अपनी आँखों पर हाथ रख कर वापस भाग आया। बाद में ये बयान करते हैं कि मुझे भड़कती हुई आग दिखाई दी जो मुझे भस्म करके रख देती। ऐसे में

आप स. ने आवाज़ दी कि ऐ शीबा! मेरे निकट आओ। ये कहते हैं कि मैं निकट गया तो आप स. मुस्कुराए और मेरे सीने पर अपना हाथ फेरा और यह दुआ की- ऐ अल्लाह! शैतान को इससे दूर कर दे। शीबा कहते हैं कि ख़ुदा कि क़सम! उसी समय रसूलुल्लाह ﷺ मुझे मेरे कान, मेरी आँख तथा मेरी जान से भी अधिक प्रिय हो गए और मेरा दिल साफ़ हो गया। फिर आप स. ने शीबा से फ़रमाया- ऐ शीबा! काफ़िरों से लड़ो। वे बयान करते हैं कि अब मैं रसूलुल्लाह ﷺ की सुरक्षा के लिए तलवार लेकर आगे बढ़ा और रसूलुल्लाह स. की मुहब्बत में ऐसा युद्ध करने लगा कि यदि उस समय मेरा बाप भी सामने आता तो मैं उसको भी मार डालता।

यह घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी बयान की है। आप रज़ी. यह घटना बयान करके फ़रमाते हैं कि यह प्रेम ही था कि जिसने उसकी दुश्मनी को दूर कर दिया। युद्ध के समाप्त होने के पश्चात आँहज़रत ﷺ अपने विश्राम कक्ष में थे तो शीबा बिन उस्मान रज़ी. आँहुज़ूर ﷺ के दर्शन हेतु उपस्थित हुए। आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम उस समय समझते थे, उससे अच्छा यह है जो ख़ुदा ने अब तुम्हारे लिए पसंद किया है। फिर आप स. ने शीबा को वे समस्त बातें बताईं जो शीबा युद्ध के मैदान में अपने दिल में सोच रहा था। शीबा ने अपने लिए क्षमा याचना का निवेदन किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने दुआ फ़रमाई कि अल्लाह तुम्हें क्षमा फ़रमाए।

इसी प्रकार नज़ीर बिन हारिस तथा उसकी कुधारणा एवं उसके सुन्दर परिणाम का भी वर्णन मिलता है कि मक्का से जो लोग कुधारणा एवं बुरे प्रतिलोभ के साथ हुनैन की सेना में शामिल हुए थे, बाद में प्रायः इस बात को व्यक्त करते थे कि अल्लाह का शुक्र है कि हम उस शिर्क पर नहीं मरेंगे जिस पर हमारे पूर्वज थे। उनका इस्लाम बहुत अच्छा रहा, ये हिजरत करके मदीने चले गए और फिर वहाँ से जिहाद के उद्देश्य से शाम देश की ओर चले गए और पन्द्रह हिजरी में यर्मूक नामक युद्ध में शहादत पाई, शेष इन्शाल्लाह तआला आगे बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब